उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबंध में ब्रजभाषा की आधुनिक अभिधारा जो राजस्थान में प्रवाहित रही है। उसके संदर्भ में यथोचित समीक्षा के साथ एक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। वैसे तो ब्रजभाषा का क्षेत्र ब्रजभूमि ही रहा है किन्तु अतीत में राजस्थान का बहुत बड़ा अंचल ब्रजसंस्कृति तथा ब्रजभाषा के प्रभाव क्षेत्र में समाहित रहाहै। राजस्थान में मुख्यतः राजस्थानी आँचलिक बोलियों का वर्चस्व रहा है किन्तु साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा का वर्चस्व सर्वोपरि रहा। इसका मूख्य कारण यही है कि सम्पूर्ण मध्यकाल में काव्य की भाषा का राष्ट्रीय स्वरूप ब्रजभाषा में ही निरूपित किया था अर्थात उत्तराचंल से लेकर कन्याकुमारी तक गुजरात से लेकर बंगाल तक समग्र राष्ट्र में यह एक मानव स्वीकृत हो चूका था यदि किसी कवि या रचनाकार को राष्ट्रीय धारा में कवि होकर देशव्यापी पहचान अंकित करनी है तो उसके लिए आवश्यक है कि वह ब्रजभाषा में रचना करे चुँकि राजस्थान ब्रजभाषा की सीमा से बहतु दूर तक संलग्न रहा है इसलिए इसके जनमानस में ब्रजभाषा की संस्कृति की छवि सहज रूप से आत्मसात होती है। आज भी ब्रज क्षेत्र सीमान्त से लगे हुए राज के अनेक ग्रामीण अंचलो और शहरों में दैयनन्दिनी की रूप में अथवा बोलचाल की भाषा की रूप में प्रयुक्त होती।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ब्रजभाषा के साहित्य में विस्तृत प्रचलन एवम् विशाल पटल पर साहित्य सृष्टि को देखते हुए यह नही कह सकते है कि राजस्थान के ब्रजभाषा की ब्रजभूमि के ब्रजभाषा कवियों से किसी भी अर्थ में कम या अलग है।

हमे ब्रज क्षेत्रों तथा राजस्थान अंचल में अँकुरित ब्रजभाषा साहित्य के विस्तृत ब्रजभाषा ग्रंन्थ जब प्राप्त हुआ तो एक सुखद आश्चर्य मेरा ध्यान इन राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों के काव्य प्रदान पर केन्द्रित हो गया और मैने अपने अनेक प्रभावक स्त्रोतों से साहित्य प्राप्त कर समीक्षात्मक एवम् विवेचन करके केन्द्रित करने का प्रयास किया आलोच्य शोध प्रबंध में पूर्णरूप से प्राप्त ब्रजभाषा राजस्थान की आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का सृजन समीक्षात्मक हुआ। इसमें विद्या विभाग, काँकरोली, सरस्वती भण्डार, उदयपुर, ब्रजग्रन्थालय का भवन तथा ब्रजभाषा अकादमी जयपुर के विशेष सौजन्य से मुझे विवेच्य विषय के लिए पुस्तक साहित्य सामग्री उपलब्ध हो सकी।

आलोच्य शोध प्रबन्ध में यथोउपलब्ध राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का संक्षिप्त परिचय तथा उनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित तथा उपलब्ध साहित्य का विवरणात्मक परिचय प्रस्तुत करते हुए साहित्यक मापदण्डों पर उसे विशलेषित किया गया है। इस शोध में प्रथम बार यह सब कुछ घटित किया गया है कि यह परिणाम और परिमाण दोनो ही द्रष्टि से यह विवेच्य साहित्य की ओर ध्यान आकृष्ठ करता है।

वैसे भी राजस्थानी बोलियों और ब्रजभाषा का शाब्दिक सांगिक एवं क्रियापदि नैक्टिय रहा है। मध्यकाल में जिस समय समग्र राष्ट्र में ब्रजभाषा को राष्ट्रीय काव्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त थी उस समय छोटे बड़े रजवाड़ो में दरबारी कवियों की नियुक्तियाँ अथवा उनके अनुबंधन आवश्यक थे और इसके लिए ब्रजभाषा आचार्य और सम्मानित कवियों को राजदरबारों में प्रतिष्ठा के साथ अनुबंधित किया जाता था अन्य राज्यों की अपेक्षा राजस्थान में यह स्थिति कही अधिक स्वीकार्य थी और तभी से राजस्थान में ब्रजभाषा काव्य के लक्षण एवम् उसके शास्त्रीय गठन के अध्ययन को आवश्यक समझकर प्रतिष्ठित कवि गण ब्रजभाषा के कवियों के रूप में नई पीढ़ि को प्रशिक्षत कर रहे थे।

धीरे-धीरे यह प्रकृति परम्परा बन गई और चूँकि, राजस्थान की परिसीमा

ब्रज क्षेत्र से संलग्न होने के कारण ब्रज संस्कृति और ब्रजभाषा का प्रभाव यहाँ सतत व्यवहारत होता रहा है।

आधुनिककाल में भी परिमाण और परिणाम की द्रष्टि से सैकड़ो ऐसे कवि राजस्थान में हुए है। जिन्होंने अपने ब्रजभाषा काव्य सृजन से साहित्य को ब्रज संस्कृति से संलग्न होने का गौरव प्रदान किया है।

पूर्व आधुनिक काल से लेकर उत्तर आधुनिक काल भी विस्तृत अवधि में राजस्थान में ऐसे शताधिक ब्रजभाषा कवि हुए है जिनके काव्य संकलन खण्ड काव्य या महाकाव्य सतत प्रकाशित होते रहे है।

उत्तर आधुनिक काल के बहुत सारे कवियों का व्यवस्थित लेखा जोखा हमें राजस्थान की ब्रजभाषा अकादमी के सौजन्य से प्राप्त होता है।

यहाँ से प्रकाशित ब्रजशतदलं नामक पत्रिका के द्वारा तथा अकादमी के स्वतंत्र की प्रकाशन अभियोजना के द्वारा एक विपुल साहित्य साम्रगी यहाँ से मुद्रित हो कर काव्य रसिकों के पास पहुचाई गई है। जिसके द्वारा सामान्य साहित्य प्रेमियों को यह आभास दिलाया गया है कि ब्रजभाषा साहित्य सृजन की समृद्ध परम्परा आज भी अग्रसर हो रही है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में इस प्रकार के यतोउपलब्ध अनेक विशिष्ट कवियों का परिचयात्मक विवरण उनके कृतित्व के उल्लेख के साथ काव्य की समीक्षा विश्लेषण एवम् मूल्यांकन के निकर्ष पर इस समस्त आधुनिक ब्रजभाषा काव्य के प्रदान को परखा गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पहली बार राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों का इस प्रकार का समीक्षात्मक अध्ययन तथा विवरणात्मक विशलेषण प्रस्तुत लेखिका द्वारा प्रथम बार ही प्रस्तुत किया जा रहा है।

राजस्थान में ब्रजभाषा साहित्य का इतिहास जितना विशाल है उतना ही श्रेष्ठ है जिसकी चर्चा सक्षिप्त में की गई है। साथ ही श्री अक्षय सिंह रत्नू, श्री अर्जुनलाल

कवि, गुरुजी कमलाकर तैलंग, श्री गोरधन सिंह 'मधु', श्री गोपेश शरण शर्मा, पं. गंगादत्त शास्त्री, श्री गौरी शंकर आर्य, श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल, श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय', डॉ. त्रिभुवन दास चतुर्वेदी श्री दामोदर लाल वार्मा, कविराज नंदकिशोर, श्री नाथूलाल महावर, श्री प्रभुदास बैरागी, श्री पद्म शास्त्री, श्री फतहलाल गुर्जर, श्री बुद्धि प्रकाश पारीक, बांगरोदी बलदेव सत्य आदि की सक्षिप्त चर्चा की गई है।

इसके अलावा राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का परिचयात्मक विवरण करते हुए उनकी मुख्य रचनाओं के साथ उदाहरण भी दिए गए है। जिनमें से कुछ इस प्रकार है। ठाकुर नाहर सिंह, श्री रामशरण पीतलिया, श्री निवास ब्रह्मचारी, डॉ. रामानन्द तिवारी, श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी जय, डॉ. रामकृष्ण शर्मा, श्री प्रभुदयाल 'दयालु', श्री मोहनलाल मधुकर, श्री हीरालाल शर्मा, श्री बलदेव शर्मा 'सत्य', श्री कमलाकर तैलंग, श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल, श्री राधा कृष्ण 'कृष्ण', श्रीमती विद्यारानी श्री, इन्दिरा त्रिपाठी, श्री वरूण चतुर्वेदी, श्री राम बाबू शुक्ल, श्री माधौप्रसाद 'माधव', श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी, पं. रमेश चन्द्र भट्ट, श्री बालकृष्ण थोलम्बिया, श्री राम बाबू रघुराय, मुन्शी मटोल सिंह, श्री नत्थुलाल चतुर्वेदी, श्री धनेश फक्कड, ठाकुर अक्षय सिंह, श्री भँवर स्वरूप 'भँवर', पटवारी रामजीलाल शर्मा, श्री यशकरण खिड़िया, डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधांशु', श्री रामदास गुप्त, श्री रामदत्त शर्मा, डॉ. दाऊ दयाल गुप्ता, श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री छुट्टन खाँ साहिल, श्री हरिप्रसाद शर्मा श्री शंकरलाल शर्मा दीपक, डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, डॉ. रामगोपाल शर्मा दिनेश, श्री रत्न गर्भ तैलंग आदि का परिचयात्मक विवरण दिया गया है।

कवियों के परिचयात्मक विवरण के साथ कुछ कवियों के कृतित्व की चर्चा विस्तृत रूप से की गई है। जिनमें से कुछ कवि इस प्रकार है। जैसे श्री रामशरण पीतलिया, डॉ. रामकृष्ण शर्मा, श्री भवँर स्वरूप भँवर, श्री यशकरण खिड़िया, श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखी', श्री शिव चरण शास्त्री, श्री किशनवीर यादव 'ब्रजवासी', श्री जयशंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय', श्री प्रभुदयाल 'दयालु', श्री हीरालाल शर्मा,

श्रीमती माधुरी शास्त्री, श्री पूरणलाल गहलौत, डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधाशुं', श्री रामदसा गुप्ता, श्री रामदत्त शर्मा, श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री छुट्टन खा साहिल, श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास', श्री कमलाकर तैलंग 'कमल', श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल, श्री राधा कृष्ण 'कृष्ण', श्रीमती विद्यारानी श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी, श्री वरुण चतुर्वेदी, श्री माधौप्रसाद, श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी, पं. रमेशचन्द्र भट्ट, श्री बालकृष्ण थोलम्बियां, मुंशी मटोल सिंह श्री नत्थुलाल चतुर्वेदी, श्री धनेस फक्कड़ कविराज, नन्दकिशोर ब्रजदास श्रीमती शान्ति 'साधिका' श्री भँवरलाल तिवारी, श्री गौरीशंकर आर्य श्री बनवारी लाल सोनी, श्री शंकरलाल शर्मा 'दीपक', श्रीमती प्रमिला गंगल, डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी, डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश', श्री रत्नगर्भ तैलंग, श्री आनन्दी लाल गोरव, दामोदर लाल तिवारी आदि।

राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों के अलावा आधुनिक काल के अन्य कवि इस प्रकार है। कविरत्न गोविन्द चतुर्वेदी, नवनीत चतुर्वेदी, ग्वाल, दीनदयाल गिरी, भारतेन्दु हरिशचन्द्र, जगन्नाथ दास रत्नाकर, वियोगि हरि, सोमठाकुर, जगदीशगुप्त, ऋषिकेश चतुर्वेदी और डॉ. विष्णु विराट आदि जिन की सक्षिप्त चर्चा करते हुए उनके काव्य सौष्ठव को दर्शाया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में राजस्थान ब्रजभाषा कवियों एवं ब्रजक्षेत्र के ब्रजभाषा कवियों की रचनाओं की तुलनात्मक समीक्षा की गई है उनकी साहित्यिक विशिष्टाओं को रेखांकित किया गया है तथा यह स्पष्ट किया गया हे कि राजस्थान के ब्रजभाषा इतर क्षेत्रिय कवियों के द्वारा जो कुछ सृजन सामने आया है वह ब्रजक्षेत्र के प्रतिष्ठापित प्रख्यात कवियों के काव्य प्रदान से कही भी अश्रेष्ठ नही है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उत्तर आधुनिक काल की कवियों की रचनाओं में परिवर्तित जीवन मूल्यो बदलती सामाजिक व्यवस्थाओं एवम् साहित्यिक के विस्तृत वैचारिक परिवेश के निष्कर्ष पर भी इस राजस्थानी ब्रजभाषा काव्य को परिक्षित किया गया है। परम्परा से विद्रोह, रूढ़ियों का विखण्डन, स्वतंत्रता संग्राम का प्रभाव, बुद्ध, गांधी, मार्क्स, और लैनिन के विचारों की संलग्नता तथा सोच के नए अदांजों के साथ

यहाँ के ब्रजभाषा कवियों ने परम्परति छन्दस काव्य गहन के अतिरिक्त स्वछन्द एवम् नई कविता की शैली में मुक्त छन्दों द्वारा भी अपनी सामायिक संचेतना को व्यक्त किया है। राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों को वैसे तो सर्वत्र ही सराह और सम्मानित किया गया है किन्तु इन कवियों के विशेष केन्द्र के रूप में कुछ नगर प्राप्त विशेष उल्लेखित रहे हे जिनमें भरतपुर, डीग, कामवन, जयपुर, ग्राम्याचल एवं नगरिय परिवेष उल्लेखनिय है इसका मुख्य एव् विशिष्ट केन्द्र जयपुर और भरतपूर रहा है। जहाँ से इस ब्रजभाषा काव्य सृजन को सरंक्षण एव् सतत प्रोत्साहन मिलता रहा है।

मैंने तटस्थ रूप से नए और पुराने ब्रजभाषा काव्य सृजन के उपलब्ध अध्ययन मनन किया है। पूर्व आधुनिक काल और उत्तर आधुनिक काल के वैचारिक अन्तराल को भी रेखांकित किया है और पूर्व आधुनिक काल तथा उतर आधुनिक काल की प्रमुख हस्ताक्षरों को साहित्य निष्कर्ष पर परिक्ष्त करके उनका समालोचनात्मक विवरण सहज रूप से समिक्षित किया गया है।

अन्त में मैं निवेदन करना चाहती हूँ कि मेरे अध्ययन की परिसीमाएँ रही है बहुत कुछ जो उपलब्ध हो चुका उसका अध्ययन मनन करे इस शोध कार्य में उपयोग किया है हो सकता है कि कुछ आँचलिक परिवेश में रचनाकार मेरे शोध यात्रा में ना आ पाए हो और जिन की चर्चा यहाँ नही हो पाई हो उनके प्रति मेरी विवश्ता ध्यावत है।

इति शुभ